डॉ. प्राप्ति भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बाराचकिया।

B.A. Part-II
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper – IV

Date:- 01-02-2023

नाटक 'अजातशत्रु' की कथावस्तु

'अजातशत्रु' नाटक का सम्पूर्ण कथानक तीन अंकों में विभाजित है। पूरे नाटक में विरोध का वर्चस्व स्पष्टतः दिखाई पड़ता है। इसका विरोध से ही आरंभ होता है और विरोध का ही विस्तार दिखाया गया है, अंत में विरोध की समाप्ति हो जाती है। इसमें मुख्य घटना स्थल तीन हैं– मगध, कौशल और कौशांबी। जो विरोध की अग्नि मगध में प्रज्जवलित हुई, उसकी प्रचंडता कौशल में दिखाई पड़ी और उसकी लपट कौशांबी तक पहुँची है।

सम्राट बिम्बसार पारिवारिक कलह के अन्तर्गत पुत्र की उद्दंडता देखकर और अपनी छोटी रानी छलना की अधिकार लोलुपता व कुमंत्रणा का विचार कर जीवन से उदासीन रहते हैं। छलना और देवदत्त की मंत्रणा के फलस्वरूप ही अजातशत्रु राज्य भार संभालने लग जाता है और बिंबसार इस कार्य से तटस्थ हो जाते हैं।

सुदत्त जब मगध का यह समाचार कौशल नरेश प्रसेनजित के पास पहुँचता है तो सारी सभा में इसी घटना को लेकर विवाद खड़ा हो जाता है। युवराज विरूढ़क द्वारा अजातशत्रु के पक्ष का समर्थन करने पर महाराज प्रसेनजित क्रोधावेश में यह घोषणा

कर देते हैं कि — "विरूढ़क युवराज पद से तथा उसकी माता शक्तिमती राजमहिषी पद से वंचित की जाती है।" इस प्रकार विरूढ़क पिता से विरुद्धा की भावना लेकर राज्य का त्याग कर देता है और डाकू बन जाता है।

कौशांबी में राजा उदयन मागंधी के षडयंत्र में पड़कर रानी पद्मावती के विरुद्ध हो जाते हैं। इस षडयंत्र का भेद खुलने पर मागंधी वहाँ से भागकर काशी में आकर वारविलासनी बना जाती है। निष्कर्षतः सम्पूर्ण प्रथम अंक विरोधात्मक प्रयत्नों से आप्लवित है। इसके उपरांत सम्पूर्ण द्वितीय अंक में इसी विरोध का विस्तार और चरम सीमा दिखाई देती है। तृतीय अंक में इस व्यापक विरोध का शमन है। प्रत्येक विरोधी दल अहंकार पाप-पूर्ण तुच्छ मनोवृत्ति पर पश्चात्ताप प्रकट करता है और अपनी भूल सुधारने का प्रयास करता है।

'अजातशत्रु' की कथावस्तु 'प्रख्यात' के अन्तर्गत आती है क्योंकि इसके अधिकांश पात्रों और घटनाओं का इतिहास ग्रंथों या बौद्धों की जातक कथाओं में उल्लेख मिलता है इसके अतिरिक्त नाटककार ने यत्र-तत्र अपनी कल्पना शक्ति के प्रयोग द्वारा भी कथावस्तु को रोचक बनाया है।